वर्ष :: 35 अंक : 01
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

/mithilavarnan

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मेनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

बोकारो :: रविवार, 06 अक्टूबर 2024 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

आपका विश्वास, हमारी ताकत

- विजय कुमार झा -
संपादक

'पत्रकारिता', यह शब्द आज भी समाज में न्याय की एक उम्मीद है। ठीक उसी प्रकार, जिस तरह पुलिस प्रशासन और न्यायपालिका से आम जनमानस को सकारात्मक सहयोग की अपेक्षा होती है, पत्रकारिता भी कहीं-न-कहीं उसी उम्मीद की डोर से बंधी है। यह अलग बात है कि आज व्यावसायीकरण के दौर में इसकी छवि जरूर प्रभावित हुई है, परंतु इसकी अहमियत आज भी बरकरार है और आगे भी रहेगी। हमें खुशी है कि विगत साढ़े तीन दशक की अपनी यात्रा में 'मिथिला वर्णन' ने 'स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता' के अपने ध्येय के साथ चलते हुए इस उम्मीद पर खरा उतरने का भरसक प्रयास किया है। यह आप पाठकों का ही स्नेह है कि 'मिथिला वर्णन' आज भी झारखंड-बिहार के सबसे लोकप्रिय साप्ताहिक अखबारों में प्रमुखतम है। पाठकों के विश्वास एवं भरोसे का ही यह परिणाम है कि झारखंड की रत्नगर्भा धरती बोकारो से प्रकाशित हिन्दी साप्ताहिक 'मिथिला वर्णन' ने एक और मील का पत्थर पार करते हुए 34 वर्षों की अपनी अविरल यात्रा पूरी कर ली है। अब यह अखबार अपनी स्थापना के 35वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। आज हम न केवल प्रिंट मीडिया, बल्कि डिजिटल मीडिया के विभिन्न माध्यमों के साथ भी पाठकों के बीच सशक्त रूप से मौजूद हैं। हमने हमेशा ही जनाकांक्षाओं एवं जन-सरोकार के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया है और जन-सरोकार ही मुख्य रूप से पत्रकारिता का उद्देश्य है, जिस दिशा में हम अपनी ओर से सदैव कटिबद्ध व तत्पर रहे हैं। यही वजह है कि हिन्दी साप्ताहिक अखबारों में 'मिथिला वर्णन' अपनी एक अलग पहचान बना पाने में सफल रहा है।

34 वर्षों की इस यात्रा में निश्चय ही कई झंझावात आए। आज भी डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के दौर में अखबारों के लिए कई चुनौतियां हैं, परंतु इन सबके बावजूद 'मिथिला वर्णन' लगातार जन-अपेक्षाओं पर खरा उतरता हुआ अग्रसर है। पत्रकारिता के प्रति एक जुनून और एक आंदोलन के रूप में वर्ष 1988 में प्रारम्भ हुए इस लघु समाचार-पत्र ने राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक आंदोलनों के कई दौर देखे और अपने जन्मकाल से लेकर आज तक कई उतार-चढ़ावों का सामना किया।

वस्तुतः, अखबार निकालना आज एक व्यवसाय और उद्योग बन चुका है। बिना पूंजी के लघु समाचार-पत्रों का अस्तित्व बचाए रखना बहुत ही कठिन है। अखबारी जगत पर बड़े-बड़े पूंजीपति घरानों का आधिपत्य है। पत्रकारिता जहां पहले राष्ट्रभक्ति और जन-चेतना की जागृति का एक सशक्त माध्यम थी, वहीं आज इस विधा में भी बहुत सारी विकृतियां आ चुकी हैं। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि आरंभिक काल से लेकर आज तक हम अपने दायित्व का निर्वहन पूरी ईमानदारी से करने की कोशिश करते आ रहे हैं और हमारा यह प्रयास आगे भी जारी रहेगा। आज समय बदला है, परिस्थितियां भी बदली हैं, परिस्थितियां छोटे अखबारों के अस्तित्व को बचाये रखने के प्रतिकूल हैं। फिर भी 'मिथिला वर्णन' अपने शुभचिंतकों व सुधी पाठकों के संबल के सहारे स्वच्छ और निर्भीक पत्रकारिता के अपने लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में निरन्तर बढ़ता रहेगा। हमारी इस यात्रा में सदैव उत्साहवर्द्धन करने वाले अपने पाठकों व शुभ-चिन्तकों को 'मिथिला वर्णन' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं एवं हमारी इस यात्रा में साथ देने के लिए आपका हृदय से आभार... !

अत्याधुनिक तकनीक बदलेगी बोकारो स्टील प्लांट की सूरत

बोले निदेशक प्रभारी बीके तिवारी- आत्मनिर्भर भारत बनाने में बीएसएल की भूमिका उत्साहवर्धक

» 7.5 मिलियन टन होगी बोकारो स्टील प्लांट की उत्पादन क्षमता
» उत्पादन-उत्पादकता में अभी तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन संतोषजनक

कार्यालय संवाददाता

बोकारो : बोकारो स्टील प्लांट (बीएसएल) निदेशक प्रभारी बीरेन्द्र कुमार तिवारी ने कहा कि 'बोकारो इस्पात कारखाना स्वदेशी कारखाना है और भारत सरकार के आत्मनिर्भर भारत की ओर बोकारो भी अपना कदम आगे बढ़ा रहा है। प्लांट के रखरखाव या आधुनिकीकरण में स्वदेशी उत्पादों को प्राथमिकता दी जा रही है। अपनी रिफ्रैक्ट्रीज यूनिट्स में मेक-इन-इंडिया प्रोडक्ट्स ला रहे हैं। आत्मनिर्भर भारत बनाने में हमारी भूमिका उत्साहवर्धक है।' एक बातचीत के दौरान 'मिथिला वर्णन' को श्री तिवारी ने बताया कि स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया (सेल) अभी 20 मिलियन टन इस्पात उत्पादन कर रहा है, जबकि आने वाले 2023-31 तक उसकी योजना 35 मिलियन टन तक बढ़ाने की है। जबकि, बोकारो स्टील प्लांट की उत्पादन क्षमता को 2030-31 तक 4.5 मिलियन टन से बढ़ाकर 7.5 मिलियन टन तक ले जाने की हमारी योजना है। इसके लिए हमने डीपीआर तैयार कर ली है और बोकारो स्टील प्लांट के विस्तारीकरण का कार्य बहुत जल्द प्रारंभ होगा। विस्तारीकरण की इस परियोजना पर लगभग 12 से 15 हजार करोड़ रुपए की लागत आने की उम्मीद है।

उन्होंने कहा- बोकारो स्टील प्लांट के विस्तारीकरण में हम जो टेक्नोलॉजी यहां पर लाने की योजना बना रहे हैं, वह दुनिया की लेटेस्ट टेक्नोलॉजी होगी। इससे हमारी उत्पादकता बढ़ेगी और उत्पादन लागत में कमी आएगी।

सभी क्षेत्रों में अबतक का बेस्ट परफॉरमेन्स

उन्होंने कहा कि पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान सेल और बोकारो स्टील प्लांट ने उत्पादन- उत्पादकता सहित सभी क्षेत्रों में अभी तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। बोकारो स्टील प्लांट की बात करें तो कोक-अवन से लेकर के स्टील उत्पादन या विक्रेय इस्पात, हॉट स्ट्रिप मिल का उत्पादन हो या डिस्पैच की बात करें, हर जगह अभी तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हमने किया है। इसी तरह से जो भी हमारे पैरामीटर हैं, उसमें भी पहले से काफी ज्यादा बेहतर प्रदर्शन किया है और इसी का नतीजा रहा है कि पिछले वर्ष मार्केट में स्टील की कीमत कम होने के बावजूद बोकारो स्टील प्लांट ने लगभग 800 करोड़ रुपए का मुनाफा अर्जित किया।

लौह अयस्क व कोयला खदानों का होगा विस्तार

निदेशक प्रभारी श्री तिवारी एक सवाल के जवाब में बताया कि हमारे आयरन ओर प्लांट्स, कोलियरीज डिवीजन और सेल रिफ्रैक्टीज यूनिट (एसआरयू), जो आज के दिन में बोकारो स्टील प्लांट का ही हिस्सा है, भविष्य में बढ़ती हुई इस्पात की मांग को पूरा करने के लिए स्टील प्लांट की जो आवश्यकता है, उसको पूरा करने के लिए भी रोड मैप बने हुए हैं। दो बड़े प्रोजेक्ट्स, गुवा में हमारा आयरन ओर माइंस का विस्तारीकरण (एक्सपेंशन) करने का है। आज हम 4 मिलियन टन का जो प्रोडक्शन यहां से करते हैं, इसे 10 मिलियन टन तक ले जाना है। आसरा में हमने कोल माइंस को अगले 25 वर्षों तक हमें कोयला दे सके, ऐसी योजना बनाई है। वहां से हर वर्ष 3 से 4 मिलियन टन कोकिंग कोल्ड मिलेगा, इसकी उम्मीद है। वहां भी कार्य प्रगति पर है।

तीन दशक आगे की योजना तैयार

उन्होंने कहा - कुल मिलाकर बोकारो स्टील प्लांट के पास आज के दिन में वे सारी संभावनाएं हैं और इस दिशा में आगे आने वाले 25-30 साल में कंपनी के भविष्य की योजना करीब-करीब तैयार है। गुवा में पहले माइनिंग एक्सपेंशन होगा। जो 4 मिलियन टन है, उसे हमें 12 मिलियन टन करना है। 12 मिलियन टन का उत्पादन होगा, जिसमें 4 मिलियन टन का एक पिलेट प्लांट लगाने की योजना है। इसमें करीब 1800 करोड़ रुपए का निवेश होगा।

सुपर स्पेशियलिटी बनेगा बीजीएच

निदेशक प्रभारी ने कहा कि प्लांट के अलावा जो हमारे टाउनशिप हैं, हमारा बोकारो जनरल अस्पताल है, पिछले दो वर्षों में स्थिति को बेहतर करने की दिशा में काफी काम किये जा रहे हैं। बहुत सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। हमारे पास जितने डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ चाहिए, वह उपलब्ध नहीं है। यह हमारी बड़ी समस्या है। उनके नहीं होने से जो हमें नए ट्रीटमेंट्स लाने हैं, उसमें हमें कठिनाई हो रही है। हमारा पहला प्रयास है कि अस्पताल में आज के दिन में जो भी सुविधा उपलब्ध है, वह और बेहतर तरीके से उपलब्ध हो। अस्पताल के सभी वार्ड्स के मेंटेनेंस उनके सफाई स्वच्छता पर ध्यान दिए गए हैं। इस अस्पताल में हमारे पास बहुत कुछ उपलब्ध है। हम लोग विचार कर रहे हैं कि कि हम यहां किसी कॉरपोरेट के साथ इसे सुपर स्पेशियलिटी में कन्वर्ट करें। यह भी एक प्रस्ताव हमारे विचार में है। क्योंकि, बोकारो जनरल हॉस्पिटल इस क्षेत्र का सबसे विश्वसनीय अस्पताल रहा है। हमारा यह प्रयास जरूर रहेगा कि बोकारो जनरल अस्पताल को हम आने वाले समय में उच्च स्तरीय सुविधाएं दें, ताकि कठिन और जटिल (शेष पेज- 7 पर)

– संपादकीय –

घुसपैठियों से हमदर्दी?

देश में एक समुदाय विशेष के तुष्टिकरण की घृणित राजनीति आजादी के बाद से ही चलती आ रही है। 1947 में मजहब के आधार पर देश का विभाजन होने के बाद भी महज एक खास समुदाय का वोट बटोरने के लिए कांग्रेस की तत्कालीन सरकारों ने तुष्टिकरण की यह राजनीति जो शुरू की, वह आज कांग्रेस के समर्थन से चलने वाली झारखंड की सरकार भी कर रही है। इसका उदाहरण हम सबके सामने है। प्रदेश के संथाल परगना के कई जिलों में बांग्लादेशी घुसपैठ की बात किसी से छुपी नहीं है। बांग्लादेश से घुसपैठ कर वहां अवैध रूप से बस चुके लोगों द्वारा पूरे क्षेत्र में आदिवासियों का अस्तित्व धीरे-धीरे मिटाया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में वहां की डेमोग्राफी (जनसांख्यिकी) में भारी बदलाव हो चुका है। हाल के दिनों में इन घुसपैठियों के आतंक से तो कई गांवों से गैर-मुस्लिमों को पलायन करने पर विवश होना पड़ा है। लेकिन, राज्य की वर्तमान सरकार शायद जान-बूझकर इस मुद्दे को न सिर्फ नजरअंदाज कर रही है, बल्कि पिछले दिनों इसे लेकर झारखंड हाई कोर्ट द्वारा दिये गये फैसले के विरोध में भी उतर आयी है। दरअसल, संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठ से संबंधित जनहित याचिका पर झारखंड हाईकोर्ट ने काफी सख्ती दिखाई है। झारखंड हाई कोर्ट ने पिछले दिनों संथाल परगना में बांग्लादेशी घुसपैठ हुई है या नहीं, इसे लेकर केन्द्र और राज्य सरकार को 'फैक्ट फाइंडिंग कमेटी' गठित करने का आदेश जारी किया था। लेकिन, झारखंड सरकार हाई कोर्ट के आदेश के विरोध में सुप्रीम कोर्ट चली गई है। पिछले दिनों हाई कोर्ट में हुई सुनवाई में राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजीव रंजन ने पक्ष रखा। जबकि, पिछली सुनवाई में हाई कोर्ट में राज्य सरकार की ओर से वर्चुअल रूप से जुड़े सुप्रीम कोर्ट के वरीय अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा था कि केन्द्र सरकार प्रार्थी की ओर बांग्लादेशी घुसपैठ को लेकर दाखिल इस जनहित याचिका को पॉलिटिकल एजेंडा के रूप में इस्तेमाल कर रही है, क्योंकि झारखंड में कुछ माह में विधानसभा चुनाव होने हैं। वहीं, सॉलिसिटर जनरल ऑफ इंडिया तुषार मेहता ने कहा था कि केन्द्र सरकार ने संथाल परगना में घुसपैठ को लेकर अंतिम जनगणना के आधार पर आदिवासियों की संख्या में कमी आने का डाटा दिया है। इससे पहले केन्द्र सरकार की ओर से शपथ पत्र दाखिल कर अदालत को बताया गया था कि बीते 30 सितंबर तक केन्द्र सरकार के गृह सचिव एवं झारखंड के मुख्य सचिव की बैठक प्रस्तावित है, जिसमें झारखंड में घुसपैठियों से निपटने के लिए संयुक्त रूप से फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाने पर विचार होगा। फैक्ट फाइंडिंग कमेटी का उद्देश्य झारखंड के सीमावर्ती जिलों क्रमशः देवघर, गोड्डा, साहिबगंज, पाकुड़, दुमका और जामताड़ा में अवैध घुसपैठियों की पहचान करना तथा ऐसे अवैध प्रवासियों को वापस भेजने की व्यवस्था करना होगा। हाई कोर्ट की खंडपीठ झारखंड में बांग्लादेशी घुसपैठियों के संथाल परगना में अवैध प्रवेश को लेकर डेनियल दानिश की जनहित याचिका पर सुनवाई कर रही है। अब राज्य सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एसएलपी दाखिल की है। इसके कारण हाई कोर्ट की खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई 13 नवंबर निर्धारित की है। यहां सवाल उठता है कि जब केन्द्रीय खुफिया एजेंसियों के अलावा संथाल परगना में निवास करने वाले अधिकतर लोग यह मानते हैं कि वहां बांग्लादेशी घुसपैठियों की वजह से बड़ा खतरा मंडरा रहा है तो फिर इसकी जांच करने से राज्य सरकार क्यों कतरा रही है? जब झारखंड हाई कोर्ट ने भी इस घुसपैठ को देश की सुरक्षा के लिए खतरा माना है तो फिर राज्य सरकार को बांग्लादेशी घुसपैठियों से इतनी हमदर्दी क्यों है? झारखंड में आदिवासियों का हितैषी होने का दावा करने वाली राज्य की वर्तमान सरकार आखिर देश की सुरक्षा और आदिवासी हितों की रक्षा करने से क्यों कतरा रही है? हाई कोर्ट के आदेश को चुनौती देकर राज्य की हेमंत सरकार का इस संवेदनशील मामले की जांच कराने से कतराना निश्चय ही इन सवालों को खड़ा करती है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

बाबूजी का दांत चूहा ले गया होगा...

सच्ची घटना पर आधारित कहानी

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
वरिष्ठ समीक्षक व विश्लेषक
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

मालिनी को आते देख सभी सखियाँ खुशी से उछल पड़ीं। 'एक सप्ताह से कहाँ थी? बारी-बारी से तुम्हें फोन किया, न तुमने फोन उठाया न मिस कॉल देख रिवर्स कॉल किया।' बोलते-बोलते गायत्री का चेहरा लाल हो गया। पद्मा, राधा, रेवती भी प्रश्नवाचक की भांति अपनी निगाहें उस पर टिका दीं। उन सखियों का मिलन स्थान पार्क था। गाहे-बगाहे ही कोई किसे के घर आतीं-जातीं थीं। सभी एक- दूसरे की राजदार थीं।

-'बुढ़ापा जो न कराए।' आँखों से आँसू पोंछते हुए मालिनी ने जवाब दिया।

-'हम लोग प्रौढ़ हुए हैं, प्रौढ़ बुढ़ापा में नहीं गिना जाता। क्या हमलोगों के हाथ कांप रहें हैं या चलना-फिरना दुश्वार हो गया है। तुमने तो प्रौढ़ावस्था की परिभाषा ही बदल दी।' मालिनी के बैठने का स्थान बनाते हुए रेवती फुसफुसाई।

-'आँखों में आँसू क्यों? मिस्टर जी से अनबन हुई या बीमार थी, सूखकर कांटा क्यों हुई जा रही हो।' उसकी ओर पानी की बोतल बढ़ाते हुए राधा बोली।

-'न उनसे अनबन हुई और न बीमार थी। बहू के साथ मैंने जल में रह मगर से बैर ले लिया था। उस वैर नेह में तोड़ दिया, एक सप्ताह लगा संभलने में...।' मालिनी की आँखों से पुनः आँसू टपक पड़े।

-'आजकल की बहुओं का दिमाग सातवें आसमान पर रहता है। वे सास-ससुर को देखना ही नहीं चाहतीं। उनके लिए तो 'मैं, मेरा पति, मेरे बच्चे यही मेरा परिवार' के जुमले आजमातीं हैं। एक हमलोगों का समय था सास के आगे घिग्घी बंधी रहती थी।'

-'चुप करो, क्यों भड़काऊ बातें बोलती हो। सारी बहुएं ऐसी नहीं होतीं। हमारी बहू, बेटे से अधिक हम लोगों का ख्याल रखती है। जब घर में रहती है, हमें रसोई में घुसने नहीं देती।' गायत्री ने राधा पर आँखें तरेरी। राधा से चुप न रहा गया, 'रसोई में घुसने नहीं देती? मतलब, भोजन तुम बनाती हो...? कुक क्यों नहीं रखती। दोनों जॉब करते हैं। कुक रखने में क्या परेशानी है?'

-'विनायक को कुक का बनाया नहीं पसंद। सुबह सात से आठ बजे पूरा खाना बनाकर चला जाता है। दिनभर बासी खाओ। शाम में छह से सात बजे आएगा। कुक से बर्बादी भी बहुत होती है।'

-'बहू-पुराण छोड़ो। मालिनी की समस्या तो सुनो। बहुत खराब आदत है, बात की तह जाने बिना नुक्ता-चीनी शुरू हो जाती है। मालिनी बताओ क्या हुआ तुम्हारे साथ?' कहते हुए पद्मा ने मालिनी का हाथ अपने हाथ में ले लिया।

स्पर्श की सहानुभूति पा, भर्राए स्वर में वह बोली, ह्यमेरी बहू को लगता है, उससे चालाक दुनिया में कोई नहीं। राजेश्वर जी के खाते में पेंशन की राशि आते ही राशन की डबल लिस्ट पकड़ा देती थी। प्रतिदिन के खर्चे दूध, शाक-भाजी भी उनसे मँगवाती थी। उधर हर चीज के पैसे चिन्मय से भी वसूलती थी।

पिछले शनिवार चिन्मय इनसे बोला, 'पापा! मेरे एक दोस्त को कनाडा की नागरिकता मिल गई है। वह अपने माता-पिता को अपने साथ ले जा रहा है। पुश्तैनी घर सस्ते में बेच रहा है, जिसे मैं खरीदना चाहता हूँ। आपके पास पेंशन के पैसे, काफी जमा हो गए होंगे। उनसे मकान खरीदने में थोड़ी मदद हो जाएगी। इस छोटे से फ्लैट से हम बड़े घर में रहेंगे।'

-'बेटा, मेरे पास कितने पैसे हैं, तुम्हारी माँ को सब पता है। उससे पूछो।' यह कहते हुए राजेश्वर घर से निकल गए।

घर खर्च की सारी बातें मुझे बतानी पड़ी। मेरी बात सुन चिन्मय को धक्का लगा। उसने हिसाब लगा के देखा, चार साल में घर खर्च के लिए करीब दस लाख वह भी दे चुका था। अपनी सफाई में बहू मुझे झूठा ठहराने लगी। राजेश्वर द्वारा लिखी चार साल की डायरी मैंने बेटे को थमा दी। उन दोनों की कहा-सुनी ने अपने सिर आसमान उठाया लिया।

रात, किसी से कुछ खाया-पिया न गया। उनका दाँत नकली है, जिसे रात में निकालकर सोते थे। उस सुबह उठे तो उनका दाँत गायब था। बहुत ढूंढा, पर न मिलना था, सो न मिला। पहली बार राजेश्वर को खुद से लाचार और रोते देखा। दाँतों का सेट बनवाने में लाखों का खर्च था। अधरों पर चमनिया मुस्कान लिए बहू बड़े आराम से मौन कटाक्ष दिखाते हुए हमारे आसपास घूमती रही।

नया दाँत बनवाने के लिए अपने गले की चेन दी उन्हें। वे ले नहीं रहे थे, बड़ी मुश्किल से माने। डॉक्टर के पास दौड़ने और नए दाँत बनवाने में बड़ी परेशानी हुई।

कल कामवाली बाई अपने छोटे बेटे के साथ आई थी। धूल-मिट्टी से सनी दाँत का सेट अपने पॉलिथीन से निकाल डाइनिंग टेबल पर रखते हुए बोली, 'हम नाहिं जानित कहाँ पाइस, आज स्कूल बैग धोवै खातिर किताब-कॉपी निकारेन तो दाँत मिलीस।' उसका बेटा सुबुकते हुए बोल, 'नाहिं, हम चोरी नाहिं किये हन। पिछले संडे ई आंटी दी रहीं कि नाले में फेंक दिहो, पैसा भी दी रहीं।' अपनी पोल खुलते देख बहू उसे डांटते हुए बोली, 'झूठ बोलते हो, थप्पड़ लगाऊँगी। बाबूजी का दाँत चूहा ले गया होगा।'

'मिथिला वर्णन' और आपकी बात

समाजक आइना आ' प्रखर समदिया

'मिथिला वर्णन' साप्ताहिक पत्र विगत कतोक वर्ष सं हम अनवरत पढ़ैत आबि रहल छी। प्रति दिन आगत रविक प्रतीक्षा रहैत अछि जे पुनः वर्णनक अगिला अंक पढ़ि सकब। 'वर्णन' बोकारोक आइना थिक आ' संपूर्ण बिहार खास क' मिथिलाक समदिया, सम्वादवाहक। आनो कतिपय कारण सं हम पत्र 'मिथिला वर्णन' के प्रशंसा करैत छी, संगहि एकर समुज्ज्वल भविष्य हेतु आपन शुभकामना ज्ञापित करैत छी । सम्पादक महोदय कें हमर लाख लाख आशीष। जय हो!

- **बुद्धिनाथ झा,** वरिष्ठ साहित्यकार।

एक आंदोलनात्मक प्रयास

'मिथिला वर्णन' एक अखबार नहीं, एक आन्दोलन है। यह आंदोलन है लोगों के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, अध्यात्मिक जानकारियों के साथ-साथ घरेलू और पारिवारिक जीवन में परिवर्तन लाने का। इसकी खबरों और आलेखों का चयन और प्रस्तुतीकरण का अंदाज अपने-आप में अलग और अनूठा है। 35वें स्थापना दिवस पर मेरी हार्दिक बधाई।

- **डॉ. आर.एन. प्रसाद,** चिकित्सक।

एक अविस्मरणीय जुड़ाव

'मिथिला वर्णन' एवं इसके संपादक सह- प्रकाशक श्री विजय झा जी के साथ मेरा बहुत निकट का संबंध रहा है। इस अखबार की गुणवत्ता आज भी वही है, जो साढे तीन दशक पहले थी। इसके साथ मेरा अविस्मरणीय जुड़ाव रहा है। क्योंकि, इसके उद्भव काल से 'मिथिला वर्णन' का मुद्रण मेरे प्रिंटिंग प्रेस में हुआ करता था। यानि उन दिनों मिथिला वर्णन पुपरी (बिहार) के समता प्रेस में छपकर प्रकाशित हुआ करता था। मिथिला वर्णन तथा इसके सम्पादक श्री झा की पूरी कहानी मेरी आत्मकथा 'अतीत की परछाईयाँ' में भी संकलित है, जो शीघ्र प्रकाशित होने जा रही है।

- **रामबाबू नीरव**
वरिष्ठ लेखक व साहित्यकार।

ऐसी पत्रकारिता बहुत जरूरी

'मिथिला वर्णन' एक ऐसा अखबार है, जो दुनियाभर की सारी खबरों को समेटकर आपके सामने प्रस्तुत करता है। हम बहुत बधाई देना चाहते हैं इसके संपादक और उनकी पूरी टीम को। आज जिस तरह भाषाई ह्रास होता चला जा रहा है, ऐसी परिस्थिति में उचित शब्दों के साथ समुचित खबरों को नए अंदाज में परोसने का इसका प्रयास वाकई काबिले-तारीफ है और यही इसकी खासियत है। इस तरह के अखबार की सही मायने में काफी उपयोगिता है और समाज में इस तरह के अखबार और ऐसी पत्रकारिता की नितांत आवश्यकता है। मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

- **धनंजय चक्रवत**
संगीत शिक्षक।

सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते...

शक्ति की भक्ति में लीन इस्पातनगरी

कहीं गुजरात के सोमनाथ मंदिर, तो कहीं गंगटोक के बुद्ध मंदिर का दिखेगा नजारा

संवाददाता

बोकारो : 'सर्वमंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणी नमोस्तुते..., या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै-नमस्तस्यै-नमस्तस्ये नमो नमः...' जैसे वैदिक मंत्रोच्चार से इन दिनों इस्पातनगरी बोकारो, उपशहर चास सहित आसपास का पूरा वातावरण गुंजरित हो रहा है। जगतजननी मां जगदम्बा की आराधना का महोत्सव शारदीय नवरात्र कलश-स्थापन के साथ शुरू हुआ। इसके साथ ही पूरी इस्पातनगरी सहित आसपास का इलाका शक्ति की भक्ति में लीन हो चुका है। चारों तरफ वैदिक मंत्रोच्चार गूंज रहे हैं तथा मां दुर्गा के भजनों से वातावरण भक्तिमय बना है। कलश-स्थापन पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने अपने घरों में जहां कलश की स्थापना पर विधिवत नवरात्र की शुरूआत की, वहीं सभी पूजा-पंडालों में भी पूरे उत्साह के साथ कलशों की स्थापना की गई।

उल्लेखनीय है कि बोकारो में सेक्टर-2सी, सेक्टर-9, सेक्टर-12 आदि स्थानों पर होने वाली दुर्गा पूजा अपने-आप में अनूठी व प्रख्यात होती है। इस बार का आयोजन भी सभी पूजा समितियां ऐतिहासिक बनाने के प्रयास में जुट गई हैं। पूजा पंडालों के निर्माण-कार्य अंतिम चरण में है। बता दें कि इस बार सेक्टर-2सी में जहां गुजरात के सोमनाथ मंदिर की झलक पूजा पंडाल के जरिए देखने को मिलेगी, वहीं सेक्टर-9 स्थित गायत्री मंदिर के समीप गंगटोक के बुद्ध मंदिर की तर्ज पर पंडाल बनाया जा रहा है। सेक्टर- 9 वैशाली मैदान तथा सेक्टर-12 में काल्पनिक मंदिरों की अनुकृतियों वालं पूजा पंडाल बनाए जा रहे हैं।

इसके अलावा नगर के सेक्टर-3 स्थित चक्की मोड़, थाना मोड़ में भी दुगार्पूजा की विधिवत शुरूआत कलशस्थापन के साथ हो गयी। कलशस्थापन से पहले जगह-जगह कलशयात्रायें निकाली गयीं। इसी तरह उपशहर चास के धर्मशाला मोड़ स्थित जगदम्बा मंदिर, साहु मार्केट के समीप स्थित शक्ति मंदिरों सहित सोलागीडीह तालाब, जोड़ा मंदिर व अन्य जगहों पर स्थित पूजा पंडालों में भी दुर्गोत्सव की धूम शुरू हो गयी है।

तांतरी मानगो में 1973 से हो रही है मां दुर्गा की पूजा

मुन्ना दुबे

तुपकाडीह : जरीडीह व चास प्रखंड के सीमा पर फुसरो जैनामोड़ मुख्य मार्ग के तांतरी मानगो में दुर्गा पूजा 1973 से हो रही है। विदित हो कि चास प्रखंड की मानगो पंचायत के केवट टोला के रहने वाले डॉ. कामिनी भट्टाचार्य ने अपने ही घर पर मां दुर्गा का विधिवत कलश स्थापित कर वर्ष 1971 में दुर्गा पूजनोत्सव की शुरूआत की थी, लेकिन अचानक 1972 में सड़क दुर्घटना में उनका देहांत हो गया। इस वजह पूजा नहीं हो सकी थी। ऐसे में मानगो के तत्कालीन मुखिया रामाधार सिंह, तांतरी के तत्कालीन प्रमुख उपेंद्रनाथ मिश्रा, सरपंच प्रद्युम्न मिश्रा, सुशील मिश्रा, कामेश्वरी मिश्रा, हरेंनचंद्र भट्टाचार्य, खगेंद्र भट्टाचार्य, हरभजू केवट, झरी केवट, धनेश्वर मल्लाह आदि ने बैठक कर दुर्गा पूजा करने का निर्णय लिया। तत्कालीन मुखिया रामाधार सिंह ने मानगो-तांतरी सीमा पर स्थित अपनी रैयती भूमि मंदिर के नाम दान दी। सभी ने मिलकर 1973 में तिरपाल लगाकर प्रतिमा स्थापित कर विधिवत दुर्गा पूजा की शुरूआत की। 1977 में मंदिर के नाम एक कमरा बनाई गई, लेकिन समय के साथ जर्जर होने के कारण 2005 में उसे तोड़कर नए सिरे से मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया, जो 2009 में पूर्ण रूपेण भव्य मंदिर बनकर तैयार हो गया।

आह्वान | डीवीसी सीटीपीएस में नैतिकता व शासन विषय पर जागरूकता कार्यक्रम

लोकहित में करें शक्ति का इस्तेमाल : ठाकुर

संवाददाता

बोकारो : केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देश और सलाह पर दामोदर घाटी निगम की ओर से मनाए जा रहे सतर्कता जागरूकता कार्यक्रम के तहत डीवीसी चंद्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र (सीटीपीएस) के प्रशिक्षण संस्थान के हॉल में नैतिकता और शासन विषय पर आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। विगत 16 अगस्त से शुरू होकर आगामी 15 नवंबर तक आयोजित होने वाले उक्त कार्यक्रम में डीवीसी के चंद्रपुरा, बोकारो थर्मल, कोडरमा, बीपीएससीएल आदि इकाइयों के कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य महाप्रबंधक और परियोजना प्रधान मनोज कुमार ठाकुर ने कहा कि अधिकारियों को अपने पावर का इस्तेमाल लोकहित और संस्था हित में करना चाहिए। किसी भी योजना का लाभ अंतिम पायदान पर खड़े लोगों को मिलना चाहिए। यही हमारा नैतिक धर्म है और सही शासन का इस्तेमाल है। उन्होंने कहा कि समाज, देश और संस्था के उत्थान के लिए हम सभी को एकजुट होकर काम करने की जरूरत है। हमारा देश का संविधान सर्वोपरि है । उन्होंने कहा कि अखंडता और सत्य निष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि तय किया जाता है। हम सभी को संगठित होकर जन सेवा भाव से सामाजिक दायित्व का निर्वहन करते रहना चाहिए।

वरिष्ठ महाप्रबंधक मानव संसाधन डीसी पांडेय ने उक्त विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला और उपस्थित अधिकारियों को बिंदुबार प्रशिक्षित किया। श्री पांडेय ने कहा कि अच्छा काम करने के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ को त्याग करना पड़ता है। संस्थान के हित में नियम कानून के अनुसार काम करने से आत्म बल और शांति मिलती है। हम सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि के लिए एकजुट होकर काम करें। समारोह का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन वरिष्ठ प्रबंधक (यांत्रिक) सतर्कता विभाग अभिषेक घोष ने किया। मौके पर ललन प्रसाद गुप्ता, राजकुमार चौधरी, राजीव रंजन, संजीव कुमार, तपन कुमार, विक्रम सिंह, राकेश मीणा, मोहम्मद इम्तियाज, अभिषेक घोष, जितेंद्र कुमार, श्वेता रानी, मुकेश कुमार, अभिनव कुमार, मनीष कुमार, अखिलेन्दु सिंह, उज्जवल विश्वास, करीना वास्के, अक्षय कुमार, तरुणेश्वर प्रसाद, भावेश के क्षत्री, सौयं कुमार दलाई, कंचन अस्मिता टोप्पो आदि मौजूद रहे।

हफ्ते की हलचल

बीएसएल दौरे पर रहे सतर्कता आयुक्त एएस राजीव

बोकारो : भारत सरकार के केन्द्रीय सतर्कता आयोग के सतर्कता आयुक्त ए एस राजीव बोकारो पहुंचे। उनके साथ सेल (स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड) के मुख्य सतर्कता अधिकारी एसएन गुप्ता भी थे। सतर्कता आयुक्त श्री राजीव के बोकारो आगमन पर बोकारो निवास में सीआईएसएफ के जवानों द्वारा उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया गया। अपने बोकारो दौरे के क्रम में सतर्कता आयुक्त ने सर्वप्रथम बोकारो स्टील प्लांट के इस्पात भवन स्थित मॉडल कक्ष में प्लांट के ले-आउट और उत्पादन प्रक्रिया की जानकारी ली। इस दौरान सेल के मुख्य सतर्कता अधिकारी श्री गुप्ता, बीएसएल के निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी सहित अधिशासी निदेशक, बीएसएल के एसीवीओ ज्ञानेश झा एवं अन्य वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

डॉ. सरिता समेत दो शिक्षिकाओं को गार्गी मंजू सम्मान

बोकारो : शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो की प्रधानाध्यापिका डॉ. सरिता गंगवार एवं प्राथमिक इकाई की वरीय शिक्षिका पिया रानी सेन को प्रतिष्ठित गार्गी मंजू शिक्षक सम्मान 2024 से नवाजा गया है। रांची के टेंडर हार्ट स्कूल में आयोजित राज्यस्तरीय एक समारोह के दौरान झारखंड के महाधिवक्ता राजीव रंजन, दक्षिणी छोटानागपुर के पुलिस महानिरीक्षक अखिलेश कुमार झा, केंद्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति बीपी सिन्हा एवं टेंडर हार्ट स्कूल के चेयरमैन सुधीर तिवारी के हाथों शिक्षिकाद्वय सम्मानित की गईं। अपने विद्यालय के शिक्षकों की इस उपलब्धि पर प्रसन्नता करते हुए प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

वेदांता ईएसएल स्टील का स्वच्छता व पौधरोपण अभियान

बोकारो : वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड नेअपने सियालजोरी स्थित प्लांट परिसर में एवं आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत सफाई व पौधारोपण अभियान चलाया। स्वच्छता और पर्यावरण-संरक्षण के प्रति जागरुकता के उद्देश्य से वेदांता ईएसएल के कर्मचारियों ने प्राथमिक विद्यालय, अलकुशा में साफ-सफाई और पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया। उपस्थित सभी लोगों ने स्वच्छता की शपथ ली एवं पर्यावरण हरा-भरा बनाने का प्रण लिया। मौके पर मुख्य अतिथि फिलमुन बिलुंग (जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड) तथा रोहित रजक (मुखिया, अलकुशा पंचायत), बबलू चौबे (सामाजिक कार्यकर्ता, मधुनिया पंचायत), श्यामली मिंज (सीएचआरओ, ईएसएल स्टील लिमिटेड), अमल घोष (निदेशक, विस्तार विकास परियोजना, ईएसएल) तथा कुणाल दरिपा (प्रमुख, सीएसआर ईएसएल स्टील लिमिटेड) शामिल थे। इस क्रम में 100 से अधिक पौधे लगाए गए।

अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा ने मनाई अग्रसेन जयंती

बोकारो : अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा ने बोकारो के अग्रसेन भवन में महाराजा श्री अग्रसेन जी महाराज की जयंती धूमधाम से मनाई गई। सर्वप्रथम अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, सुधीर अग्रवाल, चितरंजन अग्रवाल, मानिक अग्रवाल ने संयुक्त रूप से महाराजा अग्रसेन जी की प्रतिमा पर पुष्पार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम का संचालन सुशांत राईका ने किया। अपने उद्बोधन में श्री अग्रवाल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन केवल एक प्रतापी राजा ही नहीं, बल्कि क्षमता और रमता की प्रतिमूर्ति थे। भगवान श्री राम की 34 में पीढ़ी यानी द्वापर युग के अंतिम काल में अग्रसेन जी का जन्म हुआ था। हमें उनके बताए मार्गों पर चलने की जरूरत है।

इंडियन स्टील एसोसिएशन द्वारा 'विंग्स ऑफ स्टील' पुरस्कार से सम्मानित हुई वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड की मुख्य गुणवत्ता और व्यावसायिक उत्कृष्टता अधिकारी सुश्री मीनाक्षी सभरवाल

बोकारो : इंडियन स्टील एसोसिएशन (आईएसए) ने हाल ही में वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड की मुख्य गुणवत्ता और व्यावसायिक उत्कृष्टता अधिकारी सुश्री मीनाक्षी सभरवाल को प्रतिष्ठित 'विंग्स ऑफ स्टील' पुरस्कार से सम्मानित किया है। मीनाक्षी सभरवाल को यह पुरस्कार 'लिंग और विविधता' श्रेणी के अंतर्गत प्रदान की गई। यह पुरस्कार पट्टिका नई दिल्ली में आयोजित इंडियन स्टील कॉन्क्लेव के 5वें संस्करण में इस्पात सचिव श्री नागेंद्र नाथ सिन्हा द्वारा सौंपी गई, जिसमें केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री आदरणीय एच डी कुमारस्वामी, श्री नवीन जिंदल (अध्यक्ष, इंडियन स्टील एसोसिएशन), श्री अमरेन्दु प्रकाश (अध्यक्ष, सेल), श्री दिलीप ओमन (सीईओ, एएमएनएस इंडिया और कार्यकारी उपाध्यक्ष, आर्सेलरमित्तल) भी शामिल हुए।

सुश्री मीनाक्षी सभरवाल वर्तमान में वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड में मुख्य गुणवत्ता अधिकारी और मुख्य व्यवसाय उत्कृष्टता अधिकारी के पद पर हैं और झारखंड के बोकारो जिले में इसके सियालजोरी संयंत्र परिसर में तैनात हैं। सभरवाल ने अपना तीन दशक लंबा करियर महाराष्ट्र, दादरा और नगर हवेली और अब झारखंड में विभिन्न वेदांत बिजनेस इकाइयों में बिताया है। वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड के गुणवत्ता ढांचे को लागू करने में उनकी रणनीतिक भूमिका और नए उत्पाद विकास में उनके योगदान ने महत्वपूर्ण प्रमाणपत्र हासिल किए हैं और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखी है।

गुणवत्ता और व्यावसायिक उत्कृष्टता में सभरवाल के अग्रणी नेतृत्व के लिए, यह पुरस्कार मुख्य रूप से पुरुष-प्रधान उद्योग में काम करने की चुनौतियों के बावजूद, लैंगिक विविधता के प्रति उनके दृढ़ समर्पण को रेखांकित करता है। सभरवाल तरंग महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम में अपने नेतृत्व के माध्यम से, उन्होंने नेतृत्व पदों पर महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने और ईएसएल स्टील लिमिटेड में अधिक समावेशी कार्यस्थल संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त, सीआईआई और क्यूसीएफआई जैसे उद्योग निकायों में उनकी भागीदारी पूरे क्षेत्र में महिलाओं के लिए अवसरों को आगे बढ़ाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती और रेखांकित करती है। सभरवाल की उपलब्धियों में देश भर में प्रतिष्ठित 'ग्रेट मैनेजर अवार्ड' से सम्मानित होना और पीपुल बिजनेस द्वारा सम्मानित 6000 प्रबंधकों के बीच प्रतिस्पर्धा करना शामिल है। ईएसएल स्टील लिमिटेड में सीक्यूओ और चीफ ऑफ बिजनेस एक्सीलेंस मीनाक्षी सभरवाल ने प्रशंसा प्राप्त करने के बाद कहा, 'अपने परिवार के अलावा, मैं वेदांता और ईएसएल स्टील लिमिटेड के नेतृत्व का आभारी हूं। उन्होंने मुझे चुनौतीपूर्ण अवसर सौंपे, जिससे मुझे अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने और पेशेवर रूप से विकसित होने का मौका मिला। ईएसएल स्टील लिमिटेड में मैंने व्यक्तिगत रूप से लैंगिक विविधता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण प्रगति देखी है, जिसके सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, अगर हमारी महिला श्रम भागीदारी दोगुनी हो जाए तो भारत की जीडीपी वृद्धि 1 प्रतिशत बढ़ जाएगी। सरकार ने इसका संज्ञान लिया है और कई नीतिगत प्रोत्साहन शुरू किए हैं। लैंगिक विविधता और समावेशिता को बढ़ावा देने के ठोस प्रयासों से इन क्षेत्रों में महिलाओं के प्रवेश में धीरे-धीरे वृद्धि हुई है। हाल के आंकड़ों से पता चलता है कि महिलाएं अब कुल विनिर्माण कार्यबल का लगभग 12% हैं, जो 2019 में 8% से एक महत्वपूर्ण सुधार है।

कंपनी के आधिकारिक सूत्रों ने कहा- ईएसएल स्टील लिमिटेड में, हम मानते हैं कि महिलाएं विनिर्माण उद्योग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और यह हमारे कार्यबल का लगभग 16.5% महिला कर्मचारियों से स्पष्ट है। हम लिंग विविधता अनुपात में सुधार के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं और इस बदलाव के प्रति हमारी प्रतिबद्धता के लिए हमें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। हाल ही में हमें मुख्य रूप से हमारी जीविका और कौशल स्कूल परियोजनाओं के लिए 'लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण पहल' के लिए ग्रीनटेक फाउंडेशन द्वारा '10वें सीएसआर इंडिया सीएसआर अवार्ड्स में प्लैटिनम अवार्ड' से सम्मानित किया गया।

मीनाक्षी सभरवाल की उपलब्धि पर ईएसएल स्टील लिमिटेड के पूर्णकालिक निदेशक और सीईओ आशीष कुमार गुप्ता ने कहा कि मीनाक्षी को सम्मान मिलना प्रतिष्ठा की बात है। सभरवाल को आईएसए द्वारा मान्यता दी जा रही है। उनके नेतृत्व, दृढ़ समर्पण, दृढ़ लचीलेपन और सौम्य व्यवहार ने हमारे संगठन में कई लोगों को प्रेरित किया है। वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड का मानना है कि अवसर मिलने पर महिलाएं महान ऊंचाइयां हासिल कर सकती हैं। हम एक ऐसा कार्यस्थल बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहां महिलाएं अपने लक्ष्यों को हासिल करने और सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए सशक्त महसूस करें।''

वेदांता ईएसएल स्टील लिमिटेड के बारे में:

झारखंड के बोकारो जिले के सियालजोरी गांव में स्थित ईएसएल स्टील उत्पादों का एक अग्रणी निर्माता है। इसमें 2.5 मिलियन टन प्रति वर्ष (एमटीपीए) ग्रीनफील्ड एकीकृत इस्पात संयंत्र है, जो पिग आयरन, बिलेट्स, टीएमटी बार, वायर रॉड और डक्टाइल आयरन पाइप का उत्पादन करता है। संयंत्र निर्धारित पर्यावरण मानकों के साथ तालमेल बिठाकर काम करता है, विश्व स्तरीय सेवाओं और उत्पादों की पेशकश करने के लिए प्रतिष्ठित निर्माताओं से अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञता और समाधान लाता है।

Advertorial

जनभागीदारी से ही बनेगा स्वच्छ भारत : जौहरी

संवाददाता

बोकारो : स्वच्छता पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत ओएनजीसी सीबीएम परिसंपत्ति, बोकारो की ओर से विभिन्न स्वच्छता जागरुकता कार्यक्रमों के उपरान्त स्वच्छ भारत दिवस के तहत बोकारो स्थित सरकारी बस स्टैंड एवं निजी बस स्टैंड में स्वच्छता अभियान चलाया गया। उल्लेखनीय है कि ओएनजीसी, बोकारो द्वारा स्वच्छता अभियान 2024 के तहत दो गंदगी वाली जगह को स्वच्छ एवं सुंदरीकरण का बीड़ा उठाया गया है, जिसमें बोकारो बस स्टैंड एवं गोमिया पुलिस स्टेशन शामिल है। ओएनजीसी द्वारा इसे साफ-सफाई कर जिले के नागरिकों से स्वच्छता बनाये रखने का आह्वान भी किया गया। इसी क्रम में ओएनजीसी

बोकारो के कार्यकारी निदेशक सह-परिसंपत्ति प्रबंधक आदित्य जौहरी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का कथन है कि अगर सभी लोग तीन मीटर की सफाई खुद से करें तो हमारा देश खुद-ब-खुद साफ हो जायेगा।

उन्होंने बस स्टैंड में उपस्थित लोगों से स्वच्छता में जनभागीदारी की अपील की। मौके पर ओएनजीसी, बोकारो के भूतल प्रबंधक असीम कुमार, रानीगंज ब्लॉक प्रमुख बरनाली दास, उपतल दल प्रमुख आलोक दास, प्रमुख मानव संसाधन दयानंद कार्लुडिया, प्रमुख कूप सेवाएं दिलीप कुमार, आलंबन प्रबंधक बलवीर सिंह, प्रभारी सीएसआर डॉली कुमारी, प्रभारी सुरक्षा विष्णु बहादुर पांडेय, प्रबंधक (एचआर) शुभम चौधरी एवं वरिष्ट राजभाषा अधिकारी शशि शेखर भी मौजूद थे।

जीजीईएसटीसी में सहकार से रोजगार की योजना

संवाददाता

बोकारो : गुरु गोबिंद सिंह एजुकेशनल सोसायटीज टेक्निकल कैंपस, इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट कॉलेज, बोकारो में कॉलेज के एमओयू पार्टनर क्रमशः कुंदन उपाध्याय, प्रदेश अध्यक्ष, झारखंड स्माल, टाइनी सर्विसेज एंड बिजनेस एंटरप्राइजेज एसोसिएशन (स्टेट इंडस्ट्रियल एसोसिएशन), बोकारो तथा विकास कुमार, चीफ एग्ज्यूकेटिव, नेशनल इंडस्ट्रियल कंसल्टेंसी, बोकारो के साथ कॉलेज के निदेशक डा. प्रियदर्शी जरुहार की सालाना समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में एमओयू के विस्तार का पुनरावलोकन किया गया तथा भविष्य में सहकार से ट्रेनिंग प्रोग्राम, इंटर्नशिप, प्लेसमेंट इत्यादि की योजना बनाई गई। कॉलेज, जियाडा बोकारो के तहत स्थानीय उद्योगों को तकनीकी विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करता रहा है। इस अवसर पर उक्त संस्थाओं ने कॉलेज को उसके मूल्यवान योगदान के लिये प्रशस्ति पत्र प्रदान किये। इस बैठक में प्रो. दया शंकर दिवाकर, प्रो. सुमित पांडेय तथा प्रो. विकास जैन सम्मिलित हुए।

संस्थान के अध्यक्ष तरसेम सिंह व सचिव सुरेंद्र पाल सिंह ने बधाई दी है।

ईडी, सीबीआई और जेल का भय दिखाकर नहीं छीनने देंगे झारखंडियों का अधिकार : हेमंत सोरेन

चंदनकियारी की धरती से मुख्यमंत्री ने केन्द्र सरकार पर साधा निशाना

संवाददाता

बोकारो : ईडी, सीबीआई और जेल का भय दिखाकर भाजपा द्वारा झारखंडियों के अधिकार को छीनने का काम कतई बर्दाश्त नहीं करेंगे। जैसे लड़ के लिया झारखंड, वैसे ही यहां के आदिवासी व मूलनिवासी के अधिकार के लिए लड़ाई जारी रहेगी। उक्त बातें मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने चंदनकियारी के चंडीपुर मैदान में सभा को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि भाजपा व्यापारियों के हित के लिए काम करती है और हम हमारी माताओं बहनों व युवाओं के हित में योजनाओं को धरातल में उतारने के कार्य में लगे हैं। झारखंडी युवाओं को रोजगार व माता बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने को लेकर कई योजनाओं को धरातल में उतारा। इसका ताजा उदाहरण मईया सम्मान योजना के तहत लगभग 50 हजार माता-बहनों को आर्थिक सहायता की योजना शामिल है। उन्होंने कहा कि षड्यंत्र के तहत हमें विस्थापित बनाकर हमारी जमीन में ही उद्योग लगाया जा रहा है, परंतु उन उद्योगों में रोजगार के समय हमें ही वंचित रखा जाता है। इसका ताजा उदाहरण हमारी जमीन में एशिया की सबसे बड़ी बोकारो स्टील प्लांट तो बना, परंतु स्थानीय व विस्थापितों को उनका सही अधिकार अब तक नहीं मिल पाया। श्री सोरेन ने केन्द्र सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार ने हमे डराने के लिए ईडी, सीबीआई समेत तमाम केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर हमें जेल में डालकर डराने की कोशिश की, परंतु अब झारखंडी जनता उनके मंसूबों को जान चुकी है, जिससे डरने की जरूरत नहीं। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार रांची हेडक्वार्टर से नहीं, बल्कि गांवों से चलाई जा रही है, जहां गरीबों की योजनाओं को उनके घरों तक पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है।

50 विकास योजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने जिले के चंदनकियारी प्रखंड स्थित चंडीपुर में आयोजित कार्यक्रम में बोकारो, रामगढ़ एवं हजारीबाग जिले को 1240 करोड़ 57 लाख रुपए की लागत से स्वास्थ्य, सड़क परिवहन और ऊर्जा के क्षेत्र में तीन बड़ी सौगात सहित 50 विकास योजनाओं का ऑनलाइन उद्घाटन व शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने यहां 500 बिस्तर की क्षमता वाले मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल की आधारशिला रखी। वहीं, तेनुघाट थर्मल पावर स्टेशन ललपनिया में 500 मेगावाट का सोलर पावर स्टेशन और रामगढ़ जिला के पतरातू में रेल ओवरब्रिज का ऑनलाइन शिलान्यास किया।

राज्य के मजदूरों के साथ हमेशा खड़ी है सरकार

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड से बड़ी संख्या में मजदूर दूसरे राज्यों और देशों में रोजगार के लिए जाते हैं। ऐसे में देश-विदेश में काम कर रहे मजदूरों के मुश्किल की घड़ियों में सरकार हमेशा उनके साथ खड़ी रहती है। दुनिया के किसी भी कोने में अगर इस राज्य के किसी मजदूर की मौत किसी भी परिस्थिति में होती है तो उसके पार्थिव शरीर को उसके घर तक पहुंचाने का जिम्मा सरकार उठाती है। अगर यहां के मजबूर विदेश में फंस जाते हैं तो उन्हें उनके घर वापस लाने के साथ उन्हें विभिन्न योजनाओं के माध्यम से रोजगार उपलब्ध कराते है। हमारी सरकार हर परिस्थितियों में मजदूरों के हितों के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है।

क्वालिटी एजुकेशन से संवार रहे गरीब बच्चों का भविष्य

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के गरीब बच्चे-बच्चियों को क्वालिटी एजुकेशन देने के साथ उनके भविष्य को संवारने का काम सरकार कर रही है। निजी विद्यालयों की तर्ज पर स्कूल ऑफ एक्सीलेंस खोले गए हैं, जहां गरीब बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा मिल रही है। बच्चियों की पढ़ाई पैसे की तंगी कारण नहीं रुके, इसके लिए उन्हें सावित्रीबाई फुले किशोरी सावित्री योजना से जोड़ा गया है। इस राज्य के बच्चे डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, जर्नलिस्ट बनें, इसके लिए गुरुजी क्रेडिट कार्ड योजना के तहत सरकार अपनी गारंटी पर 15 लाख रुपए तक का शिक्षा लोन दे रही है। राज्य के मेधावी विद्यार्थियों को विदेश में उच्च शिक्षा के लिए स्कॉलरशिप दी जा रही है।

सभी छात्रावासों का मरम्मत हो रहा है, जहां रहने वाले विद्यार्थियों के भोजन की भी व्यवस्था सरकार के द्वारा की जा रही है। अब सभी जिलों में श्रम आवासीय विद्यालय खोलने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, ताकि यहां के मजदूरों के बच्चों को अच्छी और गुणवत्ता युक्त शिक्षा मिल सके।

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता, मंत्री बेबी देवी, विधायक कुमार जयमंगल, विधायक लंबोदर महतो, राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष योगेंद्र महतो, राज्य समन्वय समिति के सदस्य राजेश ठाकुर, सचिव अरवा राजकमल, डीआईजी सुरेंद्र कुमार झा, उपायुक्त विजया जाधव, पुलिस अधीक्षक पूज्य प्रकाश समेत अन्य अधिकारी मौजूद थे।

इधर, रांची को जाम से दिलाई निजात

नवरात्रि के दूसरे दिन मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने रांची के लोगों को एक बड़ी सौगात दी। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बहुप्रतीक्षित कांटाटोली ओवरब्रिज का उद्घाटन किया। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि आज इस पुल को पब्लिक को समर्पित किया गया है। पहले यहां चौक-चौराहे पर भारी भीड़ और जाम लगा रहता था, वो अब खत्म हो जाएगा। अब जाम से लोगों को मुक्ति मिलेगी। यह पुल ढाई साल में बनकर तैयार हो गया है। इस काम को करने वाले तमाम लोगों को बधाई और शुभकामना देता हूं। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कहा कि सभी के सहयोग, सहभागिता एवं राज्य सरकार की प्रतिबद्धता से ही योगदा सत्संग आश्रम- बहुबाजार-कांटा टोली-शांतिनगर, कोकर फ्लाईओवर के निर्माण का रास्ता साफ हो सका।

मिथिलांचल में बाढ़ का खतरा मंडराया, नदियां उफनाई

दरभंगा :

दरभंगा : नेपाल बार्डर से सटे बिहार के कई जिलों में इन दिनों बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है। बिहार-नेपाल बार्डर पर स्थित भीम नगर बैराज से एक साथ लगभग 6 लाख क्यूसेक पानी छोड़ जाने के बाद बिहार के सीमांचल इलाके के कुछ जिलों में बाढ़ ही स्थिति पैदा हो गयी है। कई गांव जलमग्न हो गए हैं और लोगों को अपने घर से विस्थापित होना पड़ा। उत्तरी बिहार के दर्जन भर से अधिक शहर बाढ़ की चपेट में है। इनमें सुपौल, सहरसा, पूर्णिया, अररिया, कटिहार, दरभंगा, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण और गोपालगंज शामिल हैं। सीतामढ़ी और दरभंगा में बागमती और अधवारा समूह की नदियां फिर बढ़ने लगी हैं। इससे बाढ़ प्रभावित क्षेत्र के लोगों में दहशत है। बागमती नदी सोनाखान व कटौझा में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। वहीं अधवारा सुंदरपुर व पुपरी में खतरे के निशान से ऊपर है। लखनदेई नदी के जलस्तर में भी काफी वृद्धि हुई है। इससे बथनाहा, डुमरा व रुन्नीसैदपुर प्रखंड के खेतों में पानी फैल रहा है। बेलसंड नगर पंचायत के चार वार्ड व एक दर्जन गांव अब भी बाढ़ के पानी से घिरे हैं। रुन्नीसैदपुर प्रखंड मुख्यालय से पानी उतर गया है लेकिन मानिकचौक, मोरसंड, गैघट के खेतों में पानी भरा है।

खड़का दुर्गा पूजा में 2048 तक मूर्ति-निर्माण की अग्रिम बुकिंग

1984 से होती आ रही है भव्य पूजा, ग्रामीणों में हर्ष

सतीश कुमार झा

सीतामढ़ी : जिले के बोखड़ा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत दुर्गा पूजा सेवा समिति खड़का द्वारा संचालित नवरात्रि दुर्गा पूजा में 41 वर्ष बाद तक के लिए अभी से ही प्रतिमा की बुकिंग हो चुकी है। वर्ष 2048 तक मूर्ति निर्माण का खर्च अग्रिम बुकिंग के जरिए दिया गया। इस बाबत दुर्गा पूजा सेवा समिति के नेतृत्व कर रहे विजय कुमार झा, अंशु कुमार झा, रूपेश कुमार, संतोष झा, गोपी रमन झा, दीपक कुमार झा, मिहिर कुमार झा, शंकर झा सहित दर्जनों ग्रामीण बताते हैं कि वर्ष 1984 से खड़का गांव में दुर्गा पूजा शुरू की गई थी, जो आज भी बरकरार है। यहां श्रद्धालुओं द्वारा मां दुर्गा से मनोकामना मांगने के बाद जब वह पूरी हो जाती है, तो श्रद्धालु मूर्ति निर्माण का खर्चा श्रद्धा से वहन करते हैं। यहां दुर्गापूजा की मुख्य विशेषता यह है कि यहां वैदिक मंत्र उच्चारण और नियम-निष्ठा के साथ पूजा की जाती है। संपूर्ण पाठ, अखंड दीप जलाकर पूजा होती है। इस दरबार में जो भी श्रद्धालु मन्नत मांगते हैं, मैया उनकी मुराद जरूर पूरी करती हैं। यही कारण है कि 2048 तक के लिए प्रतिमा की बुकिंग लोग कर चुके हैं। दुर्गा पूजा सेवा समिति के द्वारा इस वर्ष पूरे दुर्गा पूजा भागवत कथा वाचन का आयोजन किया गया है जो कलश स्थापना से ही शुरू किया जा चुका है।

मिथिला डायरी

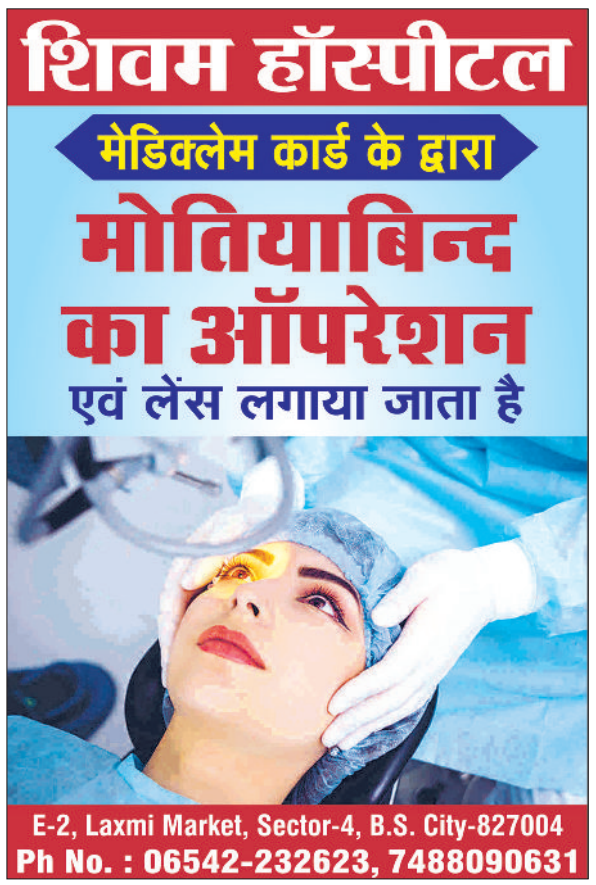

शक्ति-जागरण का अवसर है विजयादशमी

विजयादशमी (12 अक्टूबर, 2024) पर विशेष

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

शक्ति की सरलतम व्याख्या यह है कि प्रत्येक प्राणी में यह शक्ति विद्यमान रहती है। जिस प्रकार प्रत्येक प्राणी में आत्मा है..., और आत्मा तो सदैव शक्ति से युक्त होती है। नवरात्रि में नौ दिन शक्ति पूजन, शक्ति साधना, मंत्र जप, शक्ति प्राप्त करने की साधना ही नहीं है, अपितु भीतर की शक्तियों को जागृत करने की क्रिया है। यह बात आप जान लो कि ईश्वर के अलावा आपको न कोई शक्ति दे सकता है और न कोई आपसे शक्ति ले सकता है। ... और यह ईश्वर का वरदान है कि मैं प्रत्येक प्राणी को शक्ति से संपन्न करूंगा। इस शक्ति के कारण ही जगत में सभी प्राणी अपना-अपना कर्म करते हैं। जिसका शक्ति तत्व जितना अधिक जागृत होता है, वह अपने छोटे से जीवन में उतनी ही अधिक भौतिक और आध्यात्मिक सफलताएं प्राप्त करता है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि शक्ति सब में है तो सब कोई इसका उपयोग क्यों नहीं करते? इसका कारण है जब व्यक्ति के मन मे कुण्ठा, निराशा, भय, अधैर्य, चिन्ता, अवसाद इत्यादि व्याप्त हो जाते हैं तो उसकी चित्त वृत्तियों पर एक कठोर आवरण आ जाता है और वह अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं कर पाता।

संसार में प्रत्येक व्यक्ति युद्धरत

यह स्पष्ट बात है कि संसार चक्र में प्रत्येक व्यक्ति युद्धरत है। कर्म है तो यह भी युद्ध ही है। कर्म से जीत मिलती है। इसका सीधा अर्थ है युद्ध करने पर ही जीत मिलती है। आलसी व्यक्ति जो अपनी शक्तियों का उपयोग नहीं करता, वह सदैव पराजित ही रहता है और इसी पराजित को पराधीन कहा गया है।

पराधीन सपनेहु सुख नाही

पराधीन, जो स्वयं शक्ति से संपन्न नहीं है, अर्थात ऐसे पराजित व्यक्ति को स्वप्न में भी सुख प्राप्त नहीं होता। वह दुः स्वप्न ही देखता है और जागृत अवस्था में भी हर समय बार-बार हार का सामना करना पड़ता है। तो इस युद्ध में, जिसे जीवन संग्राम कर सकते हैं, उसमें कार्यों को संपादित करने के लिए जीत आवश्यक है। प्रत्येक धावक दौड़ता अवश्य है, लेकिन जो अंतिम लाइन को सर्वप्रथम छूता है, वही विजित कहलाता है। केवल दौड़ने से कार्य पूरा नहीं होता है, कार्य को पूर्ण रूप से संपादित करने से ही उसकी सफलता का प्रसाद मनुष्य को प्राप्त होता है।

पराक्रम व्यक्ति का अस्त्र-शस्त्र

अब जीवन संग्राम है तो निश्चित रूप से इसके लिए उपकरण चाहिए। क्योंकि जीवन संग्राम में विजय का अर्थ है- धन, ऐश्वर्य, वैभव, यश, कीर्ति, ओज, स्वास्थ्य और इन सब के लिए चाहिए पराक्रम। पराक्रम व्यक्ति का अस्त्र-शस्त्र है। पराक्रम का अर्थ है- मैं अपनी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए आक्रमण कर रहा हूं। उन बाधाओं पर, जिन्होंने मेरे जीवन को निर्बल और असहाय कर दिया है। शक्ति साधना का मूल उद्देश्य अपने भीतर पराक्रम को उदय करना है। जिस दिन पराक्रम जागृत हो जाता है, उस समय व्यक्ति अपने जीवन के सभी प्रकार के कार्य संपादित कर सकता है।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।
विक्रमार्जितसत्त्वस्य स्वयमेव मृगेंद्रता।।

शेर को जंगल का राजा बनने के लिए अभिषेक की आवश्यकता नहीं होती, वह अपने पराक्रम और शक्ति से स्वतः जंगल का राजा बन जाता है।

पराक्रम के लिए व्यक्ति को चाहिए अस्त्र-शस्त्र। यदि आपके पास आयुध ही नहीं है तो आप जीवन में विजय कैसे प्राप्त करेंगे? हमारे सारे देवी- देवता अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हैं। श्री राम के पास धनुष है, श्री कृष्ण के पास सुदर्शन चक्र है, विष्णु के पास चक्र है, हनुमान जी के पास गदा है, शिव के पास त्रिशूल है, ब्रह्मा के पास वेद रूपी अस्त्र है। अर्थात ज्ञान को भी अस्त्र का स्वरूप दिया गया है। सरस्वती के हाथ में पुस्तक और वीणा है। दुर्गा सप्तशती के द्वितीय अध्याय में महिषासुर मर्दिनी महालक्ष्मी से प्रार्थना है- मैं कमल के आसन पर बैठी हुई प्रसन्न मुख वाली महिषासुर मर्दिनी भगवती महालक्ष्मी का भजन करता हूं, जो अपने हाथों में अक्षमाला, फरसा, गदा, वाण, वज्र, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढ़ाल, शंख, घण्टा, मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

सबसे बड़ा अस्त्र मेधा-शक्ति

विचार करें, आपके पास अस्त्र-शस्त्र है? शस्त्र हर एक के पास नहीं होता, लेकिन अस्त्र तो हर व्यक्ति के पास सदैव और सदैव विद्यमान रहते हैं। सबसे बड़ा अस्त्र तो मेधा शक्ति है। इस मेधा शक्ति से ज्ञान का विकास होता है और ज्ञान से बुद्धि का विकास होता है और जब ज्ञान और बुद्धि का समन्वय होता है तो आपके स्वयं के अस्त्र द्वारा कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

महाभारत काल में विभिन्न दिव्यास्त्रों का वर्णन आता है। दिव्यास्त्र मंत्रों से चलाए जाते हैं, जिन पर देवी-देवताओं का ही अधिकार होता है। इन दिव्यास्त्रों को केवल मंत्र विद्या द्वारा, तंत्र विद्या द्वारा ही चलाया जा सकता है। इसके लिए हाथों में कोई शस्त्र रखने की आवश्यकता नहीं है। दिव्यास्त्र में प्रमुख हैं- आग्नेयास्त्र, पर्जन्य, वायव्य, पन्नग, गरुड़, नारायणास्त्र, पाशुपत, ब्रह्मशिरा, एकाग्निन, अमोघास्त्र और ब्रह्मास्त्र।

एक प्रबल अस्त्र आग्नेयास्त्र ऐसा अस्त्र है, जिससे अग्नि का भयंकर दावानल उठ जाता है और पर्जन्य अस्त्र से अति भयंकर वर्षा होने लगती है। वायव्य अस्त्र से आंधी-तूफान का भयावह बवण्डर आ जाता है। गुरु अपने विशिष्ट शिष्यों को उनके ज्ञान शक्ति को तीव्र कर दिव्यास्त्र प्रदान करते हैं, अर्थात उसकी विद्या प्रदान करते हैं। दिव्यास्त्रों में प्रमुख ब्रह्मास्त्र की विद्या का ज्ञान कर्ण को परशुराम ने दिया। द्रोणाचार्य ने भी कौरवों समेत पांचों पांडवों को इसकी शिक्षा दी, लेकिन ब्रह्मास्त्र विद्या का पूर्ण ज्ञान कर्ण, अर्जुन, भीष्म, द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा के अलावा कोई ग्रहण नहीं कर सका। इन शिष्यों ने अपनी इस विद्या को साधना के द्वारा निरंतर जीवंत रखा। इसीलिए मानसिक अस्त्र साधना निरंतर आवश्यक है।

आप जो धूमावती, बगलामुखी, छिन्नमस्ता, महाकाली साधना करते हैं, वह भी अस्त्र साधना ही है। जब साधक गुरु कृपा से शक्ति सिद्ध हो जाता है, तो वह अपने मानसिक अस्त्रों द्वारा अपनी सारी बाधाओं का शमन कर सकता है।

विजयादशमी और अस्त्र पूजा

प्राचीन काल से ही नवरात्रि के पश्चात अगले दिन आने वाली दसवीं को अस्त्र-शस्त्र पूजा का दिवस कहा जाता है और इसी परंपरा में प्रत्येक व्यक्ति अपने अस्त्र-शस्त्रों की पूजा करता है, जिससे वह उसके मानस में सदैव स्थापित रहे और वह उनका उचित समय पर उपयोग कर सके। निर्बल पर अस्त्र चलाकर विजय प्राप्त करना मूर्खता है। अस्त्र तभी चलाना चाहिए, जब शत्रु भी सबल हो और आपकी जान पर आ पड़ी हो, तब अपने गुरु का आह्वान कर अपनी दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र विद्या का उपयोग करना चाहिए।

सबसे उच्च है दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र साधना और साधना का अर्थ है अपनी प्रतिभा को तराशते रहना। जिस प्रकार तलवार को बार-बार धार नहीं देते हैं तो उसका पैनापन भी कम हो जाता है, अर्थात जंग लग जाता है। उसकी धार नहीं बनी रहती है। तो निरंतर ब्रह्मास्त्र-दिव्यास्त्र साधना ऐसी विद्या है, जो अपने मानस को शक्ति उपयोग के लिए सन्नद्ध करना है, क्योंकि जीवन में शत्रु अर्थात बाधा कहकर नहीं आते, वह तो अकस्मात आते हैं और यदि आपका जीवन साधनात्मक है और आप मंत्र सिद्ध हैं तो तत्काल आप अपने दिव्यास्त्र-ब्रह्मास्त्र का उपयोग कर बाधा का शमन कर सकते हैं।

शक्तिवान बनना केवल श्रेष्ठ नहीं, यह तो जीवन का सौन्दर्य है। शक्तिवान का तात्पर्य शारीरिक क्षमता से नहीं, शारीरिक मापदंड से नहीं। शक्तिवान का तात्पर्य है- जो वह चाहें, उसे प्राप्त करें..., पूरी क्षमता के साथ..., तेजस्विता के साथ..., रोते गिड़गिड़ाते हुए नहीं...। ... और यह संभव है, साधना द्वारा वह शक्ति प्राप्त कर शक्तिवान बनें, क्षमतावान बनें और आने वाली आपदाएं, चाहे वे सामाजिक हों, पारिवारिक हों या राजनीतिक, इस साधना द्वारा जीवन की छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी, किसी भी समस्या का निराकरण किया जा सकता है।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

जानिए... नौ दिन ही क्यों मनाई जाती रही है शारदीय नवरात्रि

- डॉ. बी. के. मल्लिक -
वरिष्ठ लेखक
मो. : 9810075792

आश्विन माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि से नवमी तक शारदीय नवरात्रि का पर्व मनाया जाता है। नवरात्रि के नौ दिन शक्ति की साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। यह त्योहार लोगों को आध्यात्मिक रूप से जागृत करने और उन्हें देवी दुर्गा की कृपा प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है। आइए जानते हैं नवरात्रि में घटस्थापना मुहूर्त, महत्व और नौ दिन तक क्यों मनाई जाती है शारदीय नवरात्रि-

शिव पुराण के अनुसार पार्वती, भगवान शंकर से प्रश्न करती हैं कि 'नवरात्र किसे कहते हैं!' भगवान शंकर उन्हें प्रेमपूर्वक समझाते हैं- नव शक्तिभिः संयुक्त नवरात्रं तदुच्यते, एकैक देव-देवेशि! नवधा परितिष्ठता। अर्थात् नवरात्र नवशक्तियों से संयुक्त है। इसकी प्रत्येक तिथि को एक-एक शक्ति के पूजन का विधान है। साल में चार नवरात्रि होती है। चार में दो गुप्त नवरात्रि और दो सामान्य होती है। सामान्य में पहली नवरात्रि चैत्र माह में आती है, जबकि दूसरी अश्विन माह में आती है। चैत्र माह की नवरात्रि को बड़ी नवरात्रि और अश्विन माह की नवरात्रि को छोटी या शारदीय नवरात्रि कहते हैं। आषाढ और माघ मास में गुप्त नवरात्रि आती है।

दरअसल, इन नौ दिनों में प्रकृति में विशेष प्रकार का परिवर्तन होता है और ऐसे समय हमारी आंतरिक चेतना और शरीर में भी परिवर्तन होता है। प्रकृति और शरीर में स्थित शक्ति को समझने से ही शक्ति की आराधना का भी महत्व समझ में आता है। असल में चैत्र और आश्विन के नवरात्रि का समय ऋतु परिवर्तन का समय है। ऋतु-प्रकृति का हमारे जीवन, चिंतन एवं धर्म में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रहा है, इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने बहुत सोच-विचारकर सर्दी और गर्मी की इन दोनों महत्वपूर्ण ऋतुओं के मिलन या संधिकाल को नवरात्रि का नाम दिया। यदि आप उक्त नौ दिनों अर्थात साल के 18 दिनों में अन्य का त्यागकर भक्ति करते हैं तो आपका शरीर और मन पूरे वर्ष स्वस्थ और निश्चिंत रहता है।

उक्त नौ दिनों में जो व्यक्ति अन्न का पूर्ण त्याग कर माता की भक्ति या ध्यान करता है, उसकी सभी तरह की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। या, वह जो भी संकल्प लेकर नौ दिन साधना करता है, उसका यह संकल्प पूर्ण हो जाता है। इस दौरान कठिन साधना का ही नियम है। मन से कुछ लोग नियम बनाकर व्रत या उपवास करते हैं, जो कि अनुचित है। जैसे से कुछ लोग चप्पल छोड़ देते हैं, कुछ लोग बस सिर्फ खिचड़ी ही खाते हैं जो कि अनुचित है। शास्त्र सम्मत व्रत ही उचित होते हैं।

साधना का समय : अंकों में नौ अंक पूर्ण होता है। नौ के बाद कोई अंक नहीं होता है। ग्रहों में नौ ग्रहों को महत्वपूर्ण माना जाता है। फिर साधना भी नौ दिन की ही उपयुक्त मानी गई है। किसी भी मनुष्य के शरीर में सात चक्र होते हैं, जो जागृत होने पर मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में से 7 दिन तो चक्रों को जागृत करने की साधना की जाती है। 8वें दिन शक्ति को पूजा जाता है। नौंवा दिन शक्ति की सिद्धि का होता है। शक्ति की सिद्धि यानि हमारे भीतर शक्ति जागृत होती है। अगर सप्तचक्रों के अनुसार देखा जाए तो यह दिन कुंडलिनी जागरण का माना जाता है। इसलिए, इन नौ दिनों को हिन्दू धर्म ने माता के नौ रूपों से जोड़ा है। शक्ति के इन नौ रूपों को ही मुख्य रूप से पूजा जाता है। ये नौ रूप हैं- शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा देवी, कूष्मांडा देवी, स्कंद माता, कात्यायनी, मां काली, महागौरी और सिद्धिदात्री।

शारदीय नवरात्रि की शुरुआत घटस्थापना से होती है और आखिरी दिन विजया विजयादशमी (दशहरा) के रूप में मनाया जाता है, जिसमें भगवान राम ने लंकापति रावण को और देवी दुर्गा ने महिषासुर को मारकर विजय प्राप्त की थी। एक कथा के अनुसार, माता भगवती देवी दुर्गा ने महिषासुर नामक असुर के साथ नौ दिन तक युद्ध

किया, उसके बाद नवमी की रात्रि को उसका वध किया। उस समय से देवी माता को 'महिषासुरमर्दिनी' के नाम से जाना जाता है। तभी से मां दुर्गा की शक्ति को समर्पित नवरात्रि का व्रत करते हुए इनके नौ स्वरूपों की पूजा की जाती है।

नवरात्रि की नौ रातें बहुत खास मानी जाती है। कहते हैं इसमें व्यक्ति व्रत, पूजा, मंत्र जाप, संयम, नियम, यज्ञ, तंत्र, त्राटक, योग कर नौ अलौकिक सिद्धियां प्राप्त कर सकता है। पुराणों के अनुसार रात्रि में कई तरह के अवरोध खत्म हो जाते हैं। रात्रि का समय शांत रहता है, इसमें ईश्वर से संपर्क साधना दिन की बजाय ज्यादा प्रभावशाली है। रात्रि के समय देवी दुर्गा की पूजा से शरीर, मन और आत्मा, भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक सुख प्राप्त होता है। इसीलिए इन नौ दिनों को हिन्दू धर्म ने माता के नौ रूपों से जोड़ा है। शक्ति के इन नौ रूपों को ही मुख्य रूप से पूजा जाता है।

पेज- 1 का शेष

रोगों का भी इलाज यहां संभव हो।

चाइनीज मार्केट ने बिगाड़ा मुनाफा

श्री तिवारी ने कहा कि आज के दिन में इस्पात उद्योग की स्थिति प्रतिस्पर्धात्मक हो गई है, क्योंकि चीन आज भी विश्व का सबसे बड़ा स्टील उत्पादक देश है और पूरे विश्व का करीब-करीब 50% से ज्यादा स्टील वही बनाता है। वहां जब स्टील की खपत कम हो रही है तो वह स्टील इंटरनेशनल मार्केट में जाता है। इसके चलते चीन, जापान, कोरिया आदि देश हैं, जिनके स्टील मार्केट में कम दाम पर बिक रहे हैं। वहां उन्हें प्लांट को ऑपरेशनल रखने के लिए कम दाम पर स्टील बेचना पड़ रहा है। अब इस वित्तीय वर्ष में अगर अभी तक के 6 महीना की हम बात करें तो आयात काफी ज्यादा बढ़ गया है। पिछले 8 महीना से भारत में इस्पात का आयात ज्यादा हो रहा है। इसका प्रभाव इस्पात के बाजार पर पड़ा है। पिछले अप्रैल से लेकर के मूल्य काफी कम हुआ है। इसलिए आज के दिन में हमारे व्यवसाय में जो मुनाफा था, वह काफी कम हुआ है।

चुनौतीपूर्ण रहा हॉट स्ट्रिप मिल का संवर्द्धन

उन्होंने कहा- हमारा बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था और हॉट स्ट्रिप मिल का संवर्द्धन (अपग्रेडेशन) करना। क्योंकि, वहां का जो सिस्टम है, वह काफी पुराना है और उसके स्पेयर पार्ट्स आज के दिन में हमें मिलते नहीं हैं। वहां पर जो कुछ भी समस्या होती थी तो उसका निजात पाने में हमें काफी कठिनाई होती थी, काफी समय लगता था और संभावना थी कि आने वाले दिनों में अगर समाधान नहीं मिलेगा तो उसे हमें बंद करना पड़ेगा। लेकिन, हम लोगों ने काफी मशक्कत के साथ हमारा लक्ष्य था, उसको हमने 45 दिन में पूरा किया। चरणबद्ध तरीके से हमने शटडाउन लिए और उसे काम को पूरा किया। उन्होंने कहा- मुझे बताते हुए खुशी हो रही है कि इतना चैलेंजिंग प्रोजेक्ट हम लोगों ने समय पर पूरा कर लिया। यह बोकारो स्टील प्लांट के लिए एक बड़ी उपलब्धि है कि करीब ढ़ाई सौ करोड़ रुपए की लागत से इस काम को हमने पूरा किया है। इसका हमारे उत्पादन पर असर पड़ा। इसका प्रभाव हमारे सेलेबल स्टील पर हुआ है। यह कार्य पूरा करना कंपनी के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक था। इसके लिए उन्होंने पूरी टीम को बधाई दी और कहा कि हमारे इस प्रोजेक्ट के चलते सेलेबल स्टील प्रोडक्शन पर असर पड़ा और कंपनी शुद्ध मुनाफे में नहीं है, बल्कि बोकारो स्टील प्लांट को करीब 200 करोड़ रुपए का घाटा हुआ है। आज के दिन की बात करें तो कंपनी घाटे में चल रही है, लेकिन हमें पूरा विश्वास है कि आगे आने वाले 6 महीने में हम इस कमी को पूरा कर लेंगे और मार्केट का सपोर्ट हमें कुछ मिला तो निश्चित रूप से हम मुनाफे की ओर अग्रसर होंगे।

उत्पादन-लागत में कमी लाना बड़ी चुनौती

श्री तिवारी ने कहा कि आज के दिन में अगर हम चुनौतियों की बात करें तो हमारी सबसे बड़ी चुनौती है इस्पात उत्पादन की लागत में कमी लाना। क्योंकि, बाजार में स्टील की कीमत जब कम हो रही है तो हम लागत को कैसे नियंत्रित करें। इस दिशा में काफी कार्य हुए हैं। हर एक विभाग में अपनी योजनाएं बनी हैं। हमें पूरा विश्वास है कि हम आने वाले समय में अपने उत्पादन लागत में काफी कमी लाने में सफल होंगे।

डी-काबोर्नाइजेशन भी एक बड़ा चैलेन्ज

उन्होंने कहा कि दूसरी इस्पात उद्योग के सामने एक सबसे बड़ी चुनौती है डी-काबोर्नाइजेशन की। आज के दिन की बात करें तो बोकारो स्टील में 2.6 टन कार्बन उत्सर्जन होता है। यह पर्यावरण पर जो सबसे बड़ा दुष्प्रभाव है, उसको हम कैसे कम करें, उस दिशा में हम लोगों ने जो योजना बनाई है, उसके अनुसार 2030-31 तक इसे कम करेंगे। भारत में 2045-50 तक जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए सेल के स्तर पर एक वृहद रोड मैप तैयार किया जा रहा है। इस दिशा में हमारे सार्थक प्रयास हो रहे हैं। हमें उम्मीद है कि हम सफल होंगे।

पुराने स्कूल भवनों का होगा बेहतर उपयोग, क्षतिग्रस्त भवन होंगे जमींदोज

एक प्रश्न के जवाब में श्री तिवारी ने कहा- जिस समय बोकारो स्टील प्लांट स्थापित हुआ, यहां न स्कूल थे, न अस्पताल। आज सारी व्यवस्था है। शहर में बोकारो स्टील प्लांट के 48 विद्यालय थे। लेकिन, आज के दिन में वे प्रासंगिक नहीं रहे। इसे देखते हुए हम कुछ स्कूल चला रहे हैं। बच्चों के बेहतर भविष्य को ध्यान में रखते हुए कई स्कूलों को हमने डीएवी जैसी एक उच्चस्तरीय संस्था को सुपुर्द कर दिया है। अब जो बचे हुए स्कूलों के पुराने भवन हैं, उनका बेहतर उपयोग निश्चित रूप से होना चाहिए। इस दिशा में प्रयास जारी है और बहुत जल्द वह दिखाई पड़ेगा। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही बोकारो शहर में जो असुरक्षित भवन हैं, उन्हें जमींदोज किया जाएगा। उसमें रहने वाले लोगों को अन्यत्र आवासीय सुविधा दी जाएगी। इसके लिए हमने जिला प्रशासन से भी कहा है।

अतिक्रमित जमीन पर बना है टाउन हॉल

बोकारो में अतिक्रमण को लेकर पूछे गये सवाल के जवाब में श्री तिवारी ने कहा कि अतिक्रमण हमारे घरों पर भी है, हमारी जमीन पर भी है। हमें इसके बारे में सोचना पड़ेगा कि हम बोकारो को अतिक्रमण मुक्त शहर कैसे बनाएं। एक अन्य सवाल के जवाब में उन्होंने कहा- बोकारो के कैम्प-2 में जो टाउन हॉल बना है, वह बोकारो स्टील की अतिक्रमित जमीन पर है। यही वजह है कि हम वहां न बिजली देने जा रहे हैं, न पानी। दरअसल, बोकारो में करोड़ों रुपए की लागत से जिला प्रशासन ने टाउन हॉल का निर्माण किया है, जिसका उद्घाटन पिछले दिनों मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने ऑनलाइन किया है। प्रेस वार्ता में निदेशक प्रभारी के अलावा अधिशासी निदेशक राजन प्रसाद, जयदीप दासगुप्ता, सुरेश रंगानी, सी आर महापात्रा, डॉ बी बी करुणामय, मुख्य महाप्रबंधक (नगर सेवाएं) कुन्दन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (मानव संसाधन) हरिमोहन झा, प्रमुख, संचार मणिकांत धान, जन-संपर्क विभाग के डी के सिंह, अभिनव शंकर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

शपथनामा

मैं बासुदेव कुमार (BASUDEO KUMAR) पिता- लिलेश्वर महतो, ग्राम- तिसरी, पोस्ट- कुर्कनालो, थाना- चतरोचट्टी, जिला- बोकारो, (झारखण्ड) न्यायालय, श्री प्रवीण कुमार, कार्यपालक दंडाधिकारी, बेरमो मु., तेनुघाट के समक्ष शपथपूर्वक घोषित करता हूं कि मेरे आधार कार्ड (सं. 7001 1703 9866) एवं पैन कार्ड (नं. MPVPK8431F) में मेरा नाम बासुदेव कुमार (BASUDEO KUMAR) है। बैंक ऑफ इंडिया गोमिया शाखा में मेरी पत्नी (देवन्ती देवी) के साथ एक संयुक्त खाता (नं. 481110110003826) में मेरा नाम बासुदेव महतो (BASUDEO MAHTO) अंकित है। बासुदेव कुमार (BASUDEO KUMAR) एवं बासुदेव महतो (BASUDEO MAHTO) दोनों एक ही व्यक्ति के नाम हैं, जो मैं स्वंय हूं। यह शपथ पत्र मैं अपने उपरोक्त बैंक खाते में बासुदेव महतो (BASUDEO MAHTO) के स्थान पर बासुदेव कुमार (BASUDEO KUMAR) दर्ज करवाने हेतु दाखिल कर रहा हूं।

AFFIDAVIT

I, BABY KUMARI, W/o- Hare Krishna Roy, R/o- Qr. No. 3003, Street- 43, Sector- 8/C, P.O.- Sector- 9, P. S.- Harla, B. S. City, District- Bokaro (Jharkhand), Pin- 827009, Permanent R/o Pachhiari Tola, Village- Narepur, P.O. - Bachwara, Dist.- Begusarai- 851111, Bihar, D/o- Late Siya Ram Chaudhary, Vill. & P.O.- Parsando, P.S.- Haweli, Kharagpur, Dist. - Munger Pin- 811213, Bihar, declare before the Executive Magistrate, Bokaro (vide affidavit no. 4612/20.09.2024) that my name in the Matric Certificate No. 92C 000567639), my name has been mentioned as BABY KUMARI. In some places, it is written DEZY KUMARI. BABY KUMARI and DEZY KUMARI is the same person, i.e. myself. I have made this affidavit for all the needful purposes.

तीसरे विश्वयुद्ध की आहट !

बच्चा बाबू मिस्त्री

नई दिल्ली : हमास ने इजरायल पर हमला करके जिस युद्ध का आगाज किया था। अब वह विश्व स्तर का होने जा रहा है। यह आशंका इसलिए जताई जा रही है, क्योंकि एक तरफ अमेरिका ने 43 हजार सैनिक तैनात करने का फैसला ले लिया है तो वहीं ब्रिटेन भी सेना बढ़ाने को लेकर स्पष्ट कह चुका है। वहीं ईरान ने इजरायल को चुनौती देते हुए किसी भी कार्रवाई का जवाब देने की बात कह कर विश्व को इस युद्ध के लिए तैयार रहने जैसी बात कह दी है। इस समय इजरायल-ईरान के बीच का तनाव चरम पर है, इससे मिडिल-ईस्ट की स्थिति तेजी से बदल रही है। दुनिया के तमाम देशों की नजर इस बदलते रुख पर टिकी हुई हैं। अमेरिका ने 43 हजार सैनिक तैनात करने का फैसला किया है तो ब्रिटेन भी अपनी सेना बढ़ाने की बात कह रहा है। कुल मिलाकर इन देशों ने सेना तैनाती और बल बढ़ाने की बात कहकर कोई शांति लाने जैसा उपक्रम नहीं किया है। दोनों ही देश आग में घी डाल रहे हैं, जिससे विश्वयुद्ध की आधारशिला रखी जा सकेगी।

ईरान के मिसाइल हमलों के बाद इजरायल भड़क गया है और ईरान से बदला लेने की धमकी दी है। इस बात की बहुत संभावना है कि अब इजरायल का अगला निशाना ईरान की परमाणु साइट हो सकती हैं। ये इजरायल का एक ऐसा कदम होगा, जो संघर्ष को न सिर्फ भीषण रूप देगा, बल्कि तीसरे विश्वयुद्ध की तरफ भी दुनिया को ले जा सकता है। इजरायल अपने पड़ोसियों पर हमले के पीछे तर्क दे रहा है कि वह खुद को सुरक्षित करने के लिए ऐसा कर रहा है। हमास और हिजबुल्लाह से इजरायल लंबे समय से खतरा महसूस करता रहा है और इनको खत्म करना चाहता है। हालांकि, ये हमले लेबनान और फिलिस्तीन में गंभीर आर्थिक और मानवीय संकट पैदा कर रहे हैं। इसका पूरे क्षेत्र ही नहीं विश्व स्तर पर असर दिख सकता है।

असल में मौजूदा हालात ने दुनिया के देशों को दो हिस्सों में बांट दिया है। ये सभी को पता है कि अमेरिका ब्रिटेन जर्मनी और बाकी के पश्चिमी देश हर हाल में इजरायल के साथ खड़े होंगे, लेकिन क्या, अरब देशों के साथ भी ऐसा ही होगा? क्या अरब देश ईरान के साथ इजरायल के खिलाफ खड़े होंगे? तो इसका हल्का सा इशारा जीसीसी यानी गल्फ को-ऑपरेशन काउंसिल के स्टैंड से मिलता है। सउदी अरब, कतर, बहरीन, ओमान, यूएई और खाड़ी के छह देशों को मिलाकर बनाए गए जीसीसी ने लेबनान पर इजरायली एयर स्ट्राइक का विरोध करते हुए लेबनान की आजादी का समर्थन तो किया है, लेकिन जीसीसी किसी भी सूरत में इजरायल के खिलाफ सीधे जंग में शामिल होना नहीं चाहता। असल में फिलिस्तीन का समर्थन अरब देशों की मजबूरी है। वहां के लोगों के लिए ये एक बेहद जज़्बाती मुद्दा है। फिलिस्तीन पर जब भी आंच आती है, अरब देश उनके साथ खड़े नजर आते हैं। ऐसे में हुक्मरान अपने ही लोगों की भावनाओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते, इसीलिए अरब देश ये कतई नहीं चाहते कि ईरान पर इजरायल हमला करे और जंग छिड़े। ऐसी सूरत में इस जंग की आंच से अरब देश भी नहीं बच पाएंगे। इसके अलावा अरब देशों को एक डर और भी है। उन्हें लगता है कि यदि इजरायल ने ईरान पर हमला बोल दिया तो फिर ऐसे में ईरान अपने न्यूक्लियर प्रोग्राम को लेकर और भी आक्रमक हो जाएगा। इजरायल से जंग की सूरत में ईरान दुनिया के सामने ये दलील दे सकता है कि उसे इजरायल से खतरा है। ऐसे में उसे न्यूक्लियर बम के लिए दुनिया को किसी तरह की सफाई भी नहीं पड़ेगी। अरब देश ये कतई नहीं चाहते कि ईरान कभी न्यूक्लियर पावर बने। इससे खाड़ी में पावर का संतुलन बिगड़ जाएगा। वैसे भी अरब देशों में ज्यादतर सुन्नी मुसलमान हैं, जबकि ईरान शिया बहुल देश है। इसलिए भी सउदी अरब से ईरान की कभी बनी ही नहीं। इधर, इजरायल-ईरान और हिजबुल्लाह के बीच जंग के दौरान ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने 2020 के बाद पहली बार मध्य तेहरान में इमाम खुमैनी ग्रैंड मस्जिद में शुक्रवार की नमाज के क्रम में आग को और हवा दे दी। जुमे की नमाज के बाद कहा कि मुसलमानों को मिलकर साथ रहना होगा।

दूसरी तरफ, रूस-यूक्रेन संघर्ष पहले से जारी है, जहां रूस के सामने लड़ते यूक्रेन को पश्चिम का समर्थन है। ये सब चीजें तीसरे विश्व युद्ध की आशंका को बढ़ाती हैं। इधर, भारत अपनी शांति सेना के साथ विश्व में शांति का संदेश देता नजर आया है, लेकिन यह कब तक कहा नहीं जा सकता है। भारत के संबंध चूंकि इजरायल और ईरान दोनों से ही बेहतर रहे हैं, ऐसे में किए एक पक्ष के साथ खड़े होने की बजाय शांति स्थापित करना बेहतर हल हो सकता है।

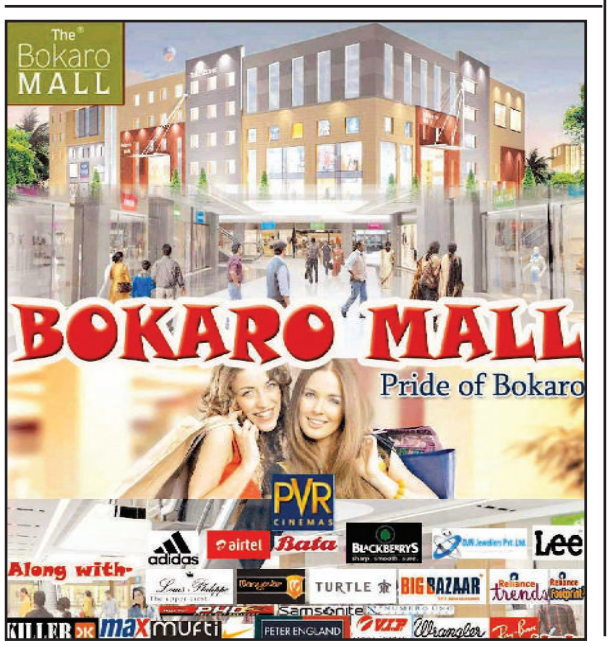

GGSESTC
GURU GOBIND SINGH EDUCATIONAL SOCIETY'S TECHNICAL CAMPUS
COLLEGE OF ENGINEERING AND MANAGEMENT
Approved by AICTE, Ministry of Education, Govt. of India, New Delhi, Affiliated to Jharkhand University of Technology, Ranchi
NH-32, CHAS, PURULIA ROAD, BOKARO, JHARKHAND - 827013

Extended admission date 23rd Oct. 2024

B.Tech
CSE, CSE (DS), CSE (CS)
Fashion Technology, ME, CE, EEE, ECE

M.B.A
Finance, Human Resources (HR)
Marketing

B.B.A & B.C.A
For BBA, Passed 10+2 with Minimum 45% Marks for General & 40% for Reserved in any discipline Science/Arts/Commerce

Diploma In Engineering
EEE, ME, Civil (For Diploma 10th Complete from any batch)

- No Tuition Fees for E-kalyan eligible Students.
- Flexible time table for working Professionals in B.Tech & MBA as a regular course.
- Excellent Placement Assistance.
- NIRF Ranking-MOUs with Industries

- Only Pvt. Engineering College conducting National Level Atal Faculty Development Program with Grant of AICTE, New Delhi (Govt. of India)
- Highest number of Patents among Pvt. Engineering & Management Colleges in Eastern India
- Eminent Faculty members invited for Expert lectures in ICAR National Institute/ESL Vedanta/Foreign Institute
- Maximum Number of PhD/PhD persuing Faculty GATE/NET/SET faculty.
- AICTE/JUT granted permission for working Professionals in B.Tech & MBA.
- Received Awards and appreciations from various reputed Government and Non Government organisations including AICTE, New Delhi, Jharkhand University of Technology, Ranchi, District, Administration, Bokaro.
- MoUs with JIADA Bokaro, ICAR Institutions, Ranchi, ESL-Vedanta etc.
- Excellent academic results & highest students satisfaction and happiness index

Registration Open for Session 2024-25

NOTE : PLEASE REFER OUR WEBSITE FOR MORE DETAILS
06542-265293 | 7992284995 | 7992415822 | 9822732264
www.ggsestc.ac.in info@ggsestc.ac.in
Follow us:

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा डीबी कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, गोविन्दपुर रोड, जीके आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **कैप्टन संजय,** फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)